

Karin Westerlund

Det begyndte med

KAIRO

Oversat af
Poul Borum,
Søren Møller Christensen,
Torben Madsen
og Morti Vizki

Forlaget Vandkunsten

HER

| | |
|--------------------------|----|
| Tid | 10 |
| Prinsens lejlighed | 11 |
| Mit billede | 12 |
| Fustat | 13 |
| Træ | 14 |
| Kaos | 15 |
| Gul | 16 |
| Det bedste sted | 17 |
| El-Sabtia | 18 |
| Attack | 19 |
| Matematisk kitsch | 20 |

DER

| | |
|-------------------------|----|
| Petra | 22 |
| Aqaba | 23 |
| Film | 24 |
| Nueba | 25 |
| Grænsepolitiet | 26 |
| Bjergene i Luxor | 27 |
| Kamel | 28 |
| Til gravene | 29 |
| Persona non grata | 30 |
| Dabadib | 31 |
| Til Bagdad | 32 |

BILLEDER

HAN

| | |
|-----------------------------|----|
| Blod | 46 |
| Privat grav | 47 |
| I Aqababugten | 48 |
| Den sumeriske skriver | 49 |
| Bøn | 50 |
| Bankmanden | 51 |
| Manden i køkkenet | 52 |
| Farvel | 53 |
| Test | 54 |
| Sort-Hvidt | 55 |
| Han | 56 |

HUN

| | |
|------------------------|----|
| Begravelse | 58 |
| Lillesøsteren | 59 |
| Rengøringskonen | 60 |
| Promenade | 61 |
| Tage mål | 62 |
| Sorg | 63 |
| Søsterens måltid | 64 |
| Advokaten | 65 |
| Lille pige | 66 |
| En muslim | 67 |
| Massage | 68 |

BILLEDER

DE

| | |
|---------------------------|----|
| Nytårsnat | 82 |
| Æslerne | 83 |
| Penge | 84 |
| Valgfrihed | 85 |
| Sidi Ali Molid | 86 |
| Skænderi | 87 |
| Sidi Ali Moskeen | 88 |
| Mod | 89 |
| Kvinderne i ørkenen | 90 |
| I venten på båden | 91 |
| Hvaler | 92 |

DET

| | |
|---------------------------|-----|
| Manden | 94 |
| Møde i båd | 95 |
| Erotik | 96 |
| Downtown | 97 |
| Marsa Mathruh | 98 |
| Det | 99 |
| Aqaba om natten | 100 |
| Dobbeltmoral | 101 |
| Grækerens lejlighed | 102 |
| Uden for oasen | 103 |
| Kairo om natten | 104 |

BILLEDER

DU

| | |
|----------------------|-----|
| Ondt | 118 |
| Klarhed | 119 |
| At vente | 120 |
| Hos dig | 121 |
| Mand | 122 |
| Blå fisk | 123 |
| Slutningen | 124 |
| Magt | 125 |
| En kopter | 126 |
| Du | 127 |
| På kirkegården | 128 |

VI

| | |
|-------------------|-----|
| Karun | 130 |
| I taxaen | 131 |
| Tæppe | 132 |
| På hotellet | 133 |
| Bus | 134 |
| Dashur | 135 |
| Fortabt | 136 |
| Afrit | 137 |
| Par | 137 |
| Fejl | 139 |
| 1-6 | 140 |

GUD

| | |
|--------------------------|-----|
| Engel | 142 |
| Taxi | 143 |
| Lampen | 144 |
| En mands lejlighed | 145 |
| Museet i Kairo | 146 |
| Trafikken | 147 |
| Gir | 148 |
| Religion | 149 |
| Mumierne | 150 |
| Elskende | 151 |
| Kairo | 152 |

HER

Tid

Der findes ikke 1, 2, 3, 4, 5 i Kairo.
Der findes kun 1.
Derefter kommer et nyt 1.
Men to kommer aldrig.
Skønt på en eller anden måde når man dog frem til 100.
Det er umuligt at regne ud.
Det må åndes igennem.

Prinsens lejlighed

Jeg træder ind i en stor lejlighed
Den er dyrt og smagfuldt møbleret
Men ingen har boet der i fire år
Alligevel ligger alt som om nogen for nylig har forladt den
Sengen er uredt
Ved siden af hovedpuden ligger en avis slået op
Tøj hænger på en stol
En tekande og nogle tekopper står inde i salonen ved sofaen
Alt helt naturligt
Ja, helt naturligt, men lige omvendt
Overalt
på alting
støv
et tykt lag støv
fire års støv
fire år af Kairo-støv
Det er meget støv

Det er smukt
Det er umuligt at konstruere
I tynde lag ligger støvet og afgiver tid
Det er udvisket
Det skinner
Det er smukt

Jeg vil filme
Prinsen undskylder sig, siger nej og synes bare det er pinligt